3 (Sem–2) HIN M 2

2016

HINDI

(Major)

Paper : 2.2

(Ritikalin Kavyadhara)

Full Marks : 80

Time : 3 hours

The figures in the margin indicate full marks for the questions

1. पूर्ण वाक्य में उत्तर दीजिए : 1×10=10

(क) किसने रीतिकाल को 'अलंकृत काल' कहा है?

(ख) 'रसिक प्रिया' किसकी रचना है?

(ग) बिहारी की रचना का नामोल्लेख कीजिए।

(घ) घनानंद रीतिकाल की किस काव्यधारा के कवि हैं?

(ङ) महाकवि देव का वास्तविक नाम क्या था?

(च) सेनापति की काव्य-भाषा क्या है?

(छ) किसने मतिराम को 'हिन्दी नवरत्न' में स्थान दिया है?

(ज) भूषण को किसने 'कवि भूषण' की उपाधि प्रदान की थी?

(झ) 'काव्य प्रकाश' के प्रणेता कौन हैं?

(ञ) 'रीतिकाव्य-संग्रह' के सम्पादक कौन हैं?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर अति संक्षेप में दीजिए : 2×5=10

(क) 'कविप्रिया' के रचयिता कौन हैं? यह किस कोटि का काव्य है?

(ख) "जा तन की झाँई परत, स्यामु हरित दुति होइ"—यहाँ 'हरित दुति' से क्या तात्पर्य है?

(ग) घनानंद की कविता के आलम्बन कौन हैं?

(घ) शिवसिंह सरोज के अनुसार देव के ग्रंथों की संख्या कितनी है? उनमें से किसी एक का नाम लिखिए।

(ङ) भूषण द्वारा प्रयुक्त किन्हीं दो छंदों का नामोल्लेख कीजिए।

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दीजिए : 5×4=20

(क) "जब हन्यौ हैहयराज इन बिन क्षत्र क्षितिमंडल कर्यो"—संदर्भ का उल्लेख करते हुए हैहयराज के प्रसंग को स्पष्ट कीजिए।

अथवा

"सोभत दंडक की रुचि बनी।
भाँतिन-भाँतिन सुंदर धनी।"—का आशय स्पष्ट कीजिए।

(ख) अतिशयोक्ति क्या है? कवि बिहारी द्वारा रचित किसी एक अतिशयोक्तिपरक दोहे का उल्लेख कीजिए।

अथवा

"लाज लगाम न मानहीं, नैना मो बस नाहिं।" यहाँ 'लाज लगाम न मानहीं' से क्या तात्पर्य है?

(ग) घनानंद ने 'अति सूधो सनेह को मारग है' कहकर प्यार की अन्य किन विशेषताओं का उल्लेख किया है?

अथवा

घनानंद का कवि-परिचय प्रस्तुत कीजिए।

(घ) बिहारी के वियोग वर्णन की विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

अथवा

सेनापति की कविताओं की भाव-विविधता पर संक्षेप में चर्चा कीजिए।

4. अधोलिखित अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 10×2=20

(क) वासों मृगअंक कहैं तोसों मृगनैनी सब, वह सुधाधर तुहूँ
सुधाधर मानिये।
वह द्विजराजि तेरे द्विजराजि राजै, वह कलानिधि तुहूँ कला
कलित बखानिये।
रत्नाकर के हैं दोऊ 'केसव' प्रकासकर, अम्बर बिलास
कुबलय हितू गानिये।
वाके अति सीतकर तुहूँ सीता सीतकर, चन्द्रमा सी चन्द्रमुखी
सब जग जानिये॥

अथवा

पत्रा ही तिथि पाइयै, वा घर कै चहुँ पास।
नित प्रति पून्यौईं रहै, आनन-ओप-उजास॥

(ख) राधिका कान्ह को ध्यान धरै, तब
कान्ह है राधिका के गुन गावै।
त्यों अँसुवा बरसैं बरसाने को
पाती लिखै, लिखि राधिकै ध्यावै।

2221M

राधे है जावत है छिन में, वह
प्रेम की पाती लै छाती लगावै।
आपु ते आपुन ही उरझै,
सुरझै बिरूझै समुझै समुझावै॥

अथवा

चकित चकत्ता चौंकि उठै बार-बार,
दिल्ली दहसति चित चाहै खरकति है।
बिलखि बदन बिलखात बिजैपुर-पति,
फिरत फिरंगिन की नारी फरकति है।
थर-थर काँपत कुतुब साहि गोलकुंडा,
हहरि हबसि भूप भीर भरकति है।
राजा सिवराज के नगारन की धाक सुनि,
केते पातसाहन की छाती दरकति है॥

5. केशव को 'क्लिष्ट काव्य का प्रेत' कहना कहाँ तक संगत है? सतर्क उत्तर दीजिए। 10

अथवा

बिहारी की काव्य-कला पर विचार कीजिए।

6. पठित कविताओं के आधार पर घनानंद की विरहानुभूति पर प्रकाश डालिए। 10

अथवा

"वीर-रस भूषण के काव्य में साकार हो उठा है"—पठित कविताओं के आधार पर प्रस्तुत उक्ति की पुष्टि कीजिए।

★★★